

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 17-11-2025

विषय सूची

- » राष्ट्रीय प्रेस दिवस
- » विदेश मंत्री की कठर यात्रा
- » प्रिसीजन बायोथेरेप्यूटिक्स
- » 5वां लेखापरीक्षा दिवस
- » भारत द्वारा जलवायु और प्रकृति वित्त के लिए मंच स्थापित करने की योजना का अनावरण

संक्षिप्त समाचार

- » रौलाने महोत्सव
- » आदि कुंभेश्वर मंदिर
- » सेनकाकू द्वीप समूह
- » कांटम घड़ी
- » कोरोनल मास इजेक्शन
- » सिलीगुड़ी कॉरिडोर

The Real Day-Night Test Is In Muni



राष्ट्रीय प्रेस दिवस

संदर्भ

- भारत ने राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया, जो हमारे समाज में स्वतंत्र और जिम्मेदार प्रेस की आवश्यक भूमिका का सम्मान करता है।

परिचय

- राष्ट्रीय प्रेस दिवस, 16 नवंबर को मनाया जाता है।
- यह प्रेस परिषद् ऑफ इंडिया (PCI) की स्थापना 1966 में हुई थी, जिसे बाद में 1979 में नए कानून के अंतर्गत पुनर्गठित किया गया।
- इस परिषद् का विचार सबसे पहले प्रथम प्रेस आयोग ने 1956 में प्रस्तावित किया था, जिसने प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा और नैतिक रिपोर्टिंग को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया।
- इस वर्ष की थीम बढ़ती गलत जानकारी के बीच प्रेस की विश्वसनीयता की रक्षा पर केंद्रित है, जो सटीक और नैतिक रिपोर्टिंग के महत्व को उजागर करती है।

भारत का मीडिया परिवर्शन

- भारत विश्व के सबसे बड़े और विविध मीडिया पारिस्थितिक तंत्रों में से एक है, जिसमें प्रिंट, टेलीविजन, रेडियो, ओटीटी प्लेटफॉर्म एवं डिजिटल समाचार शामिल हैं।
- भारत का जीवंत मीडिया परिवर्शन लगातार बढ़ रहा है।
- पंजीकृत प्रकाशनों की संख्या 2004–05 में 60,143 से बढ़कर 2024–25 में 1.54 लाख हो गई है, जो प्रेस की बढ़ती पहुंच और क्षमता को दर्शाती है।

मीडिया का महत्व

- मीडिया को प्रायः लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, जो जनमत निर्माण, विकास को आगे बढ़ाने और सत्ता को जवाबदेह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- ऐतिहासिक रूप से, अखबारों ने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- मीडिया और मनोरंजन उद्योग GDP, रोजगार एवं भारत की वैश्विक सांस्कृतिक पहचान में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

- मीडिया साम्प्रदायिक सब्दाव, समावेशिता और जागरूकता को बढ़ावा देता है, विशेषकर विविध समाजों में।

चुनौतियाँ

- ओटीटी प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने उपभोग के तरीकों को परिवर्तित कर दिया है, जिससे पारंपरिक मीडिया पर दबाव बढ़ा है।
- मीडिया पक्षपात, राजनीतिक प्रभाव और प्रेस स्वतंत्रता पर हमले विश्वास को कमजोर करते हैं।
- नए कानूनों से अत्यधिक सरकारी नियंत्रण का भय उत्पन्न होता है।
- विज्ञापन राजस्व में गिरावट और डिजिटल सामग्री के लिए अनुचित भुगतान मॉडल टिकाऊपन को खतरे में डालते हैं।
- बड़े इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के साथ, फेक न्यूज़ और ऑनलाइन खतरों से बचाव महत्वपूर्ण है।

मीडिया को नियंत्रित करने वाला संस्थागत ढांचा

- भारत का मीडिया शासन ढांचा संस्थानों, कानूनों और पहलों पर आधारित है, जो प्रेस स्वतंत्रता की रक्षा, नैतिक पत्रकारिता को बढ़ावा, नियमन का आधुनिकीकरण एवं मीडिया पेशेवरों का समर्थन करता है।
- प्रेस रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया (PRGI):** 1956 में स्थापित, अब प्रेस एंड रजिस्ट्रेशन ऑफ पीरियोडिकल्स एक्ट, 2023 (PRP एक्ट) के अंतर्गत वैधानिक।
 - यह प्रिंट मीडिया के पंजीकरण और नियमन की देखरेख करता है। प्रेस सेवा पोर्टल एक पूर्ण डिजिटल, पेपरलेस प्रणाली सक्षम करता है।
 - प्रेस सेवा पोर्टल:** PRGI के अंतर्गत एक प्रमुख डिजिटल सुधार।
- प्रेस परिषद् ऑफ इंडिया (PCI):** प्रेस परिषद् अधिनियम, 1978 के अंतर्गत स्वायत्त निकाय। यह प्रेस स्वतंत्रता उल्लंघनों पर शिकायतों को संभालता है और पत्रकारिता आचार संहिता को लागू करता है।

- ▲ PCI ने 2023 में प्राकृतिक आपदाओं पर रिपोर्टिंग के लिए दिशानिर्देश जारी किए।
- **प्रेस एंड रजिस्ट्रेशन ऑफ पीरियोडिकल्स (PRP) एक्ट, 2023:** औपनिवेशिक युग के कानून का आधुनिकीकरण करता है, ऑनलाइन पंजीकरण शुरू करता है।
- ▲ शीर्षक आवंटन और पत्रिकाओं के पंजीकरण को पूरी तरह डिजिटाइज करता है।
- **संस्थान और योजनाएँ:**
 - ▲ भारतीय जनसंचार संस्थान (IIMC) (1965) प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण प्रदान करता है।
 - ▲ पत्रकार कल्याण योजना (2001, संशोधित 2019) पत्रकारों और उनके परिवारों को कठिनाई में वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

आगे की राह

- भारत का मीडिया क्षेत्र, लोकतंत्र और वैश्विक संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण है, इसे जिम्मेदारी से विकसित होना चाहिए ताकि विकास एवं विश्वसनीयता बनी रहे। इसके लिए स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए डिजिटल चुनौतियों का समाधान करने वाला संतुलित नियमन, प्रेस स्वतंत्रता के लिए बेहतर सुरक्षा एवं डिजिटल अनुकूलन के लिए उचित भुगतान आवश्यक है।
- प्रशिक्षण, साइबर सुरक्षा और नैतिक पत्रकारिता में क्षमता निर्माण आवश्यक है, साथ ही भारत की कंटेंट क्रिएशन, एनीमेशन एवं VFX में ताकत का उपयोग वैश्विक स्थिति के लिए किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर प्रमुख गतिविधियाँ

- **राष्ट्रीय पत्रकारिता उत्कृष्टता पुरस्कार:** PCI द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।
 - ▲ उत्कृष्ट कार्य के लिए पत्रकारों को मान्यता देता है।
 - ▲ राजा राम मोहन राय पुरस्कार सर्वोच्च सम्मान है।
- **राष्ट्रीय प्रेस दिवस स्मारिका:** इसमें राष्ट्रीय नेताओं के संदेश शामिल होते हैं।
 - ▲ मीडिया विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित होते हैं।
 - ▲ पुरस्कार विजेताओं की उपलब्धियों को उजागर करता है।

भारत की मीडिया नियामक संरचना (तीन-स्तरीय ढांचा)

- **प्रिंट मीडिया (प्रेस परिषद् ऑफ इंडिया - PCI):** पत्रकारिता आचार संहिता (नैतिक मानक)। PCI धारा 14 के अंतर्गत चेतावनी/निंदा कर सकता है।
 - ▲ फर्जी, मानहानिकारक या भ्रामक प्रिंट सामग्री को नियंत्रित करता है।
- **टेलीविजन (केबल टीवी नेटवर्क्स (विनियम, 1995)):** कार्यक्रम संहिता लागू करता है।
 - ▲ अश्लील, मानहानिकारक, साम्प्रदायिक या झूठी सामग्री पर रोक लगाता है।
 - ▲ (2021 संशोधन) ने तीन-स्तरीय शिकायत प्रणाली शुरू की।
- **डिजिटल मीडिया – आईटी नियम, 2021:** डिजिटल समाचार और ओटोटी के लिए आचार संहिता।
 - ▲ आयु वर्गीकरण, शिकायत अधिकारी और अनुपालन मानदंड।
 - ▲ आईटी अधिनियम की धारा 69A के अंतर्गत, संप्रभुता और अखंडता के हित में सामग्री/प्लेटफॉर्म को ब्लॉक करने की शक्ति।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2025

- RSF (रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स), एक अंतरराष्ट्रीय निगरानी संस्था, प्रत्येक वर्ष विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक जारी करती है, जो 180 देशों को गुणात्मक और मात्रात्मक संकेतकों का उपयोग करके रैंक करती है।
- भारत 2025 में 151वें स्थान पर रहा है, कुल स्कोर 32.96 के साथ। यह 2024 के 159वें स्थान से 8 स्थानों का सुधार दर्शाता है।
- **भारत की रैंकिंग को प्रभावित करने वाली प्रमुख चिंताएँ:**
 - ▲ समाचार कक्षों पर आर्थिक दबाव
 - ▲ मीडिया स्वामित्व का केंद्रीकरण
 - ▲ राजनीतिक और कानूनी दबाव
 - ▲ पत्रकारों के लिए ऑनलाइन उत्पीड़न और सुरक्षा चिंताएँ

Sources: PIB

विदेश मंत्री की कतर यात्रा

संदर्भ

- विदेश मंत्री ने कतर के शीर्ष नेतृत्व से भेंट की और द्विपक्षीय संबंधों के प्रमुख पहलुओं जैसे ऊर्जा एवं व्यापार के साथ-साथ क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की।

भारत-कतर संबंधों पर संक्षिप्त विवरण

- रणनीतिक साझेदारी:** 2025 में भारत और कतर ने अपने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक ले जाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।
 - भारत वर्तमान में खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के चार अन्य सदस्य देशों – संयुक्त अरब अमीरात (UAE), सऊदी अरब, ओमान और कुवैत – के साथ रणनीतिक साझेदारी रखता है।
- आर्थिक और व्यापारिक संबंध:**
 - कतर भारत को तरलीकृत प्राकृतिक गैस (LNG) और तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (LPG) का सबसे बड़ा प्रदाता है।
 - FY 2023-24 में कतर ने भारत को 10.91 मिलियन मीट्रिक टन LNG और 4.92 मिलियन मीट्रिक टन LPG की आपूर्ति की।
 - वर्तमान वार्षिक व्यापार \$14.08 बिलियन का है।
 - दोनों पक्षों ने दोहरे कराधान से बचाव की संधि पर हस्ताक्षर किए और पाँच वर्षों में व्यापार को \$28 बिलियन तक दोगुना करने की योजना बनाई।
- रक्षा:**
 - भारत द्विवार्षिक दोहा अंतर्राष्ट्रीय समुद्री रक्षा प्रदर्शनी और सम्मेलन (DIMDEX) में भाग लेता है।
 - “ज़ैर-अल-बहर” भारतीय नौसेना और कतर एमिरी नौसैनिक बल (QENF) के बीच संयुक्त नौसैनिक अभ्यास है।
 - भारत-कतर रक्षा सहयोग समझौता 2008 में हस्ताक्षरित हुआ और 2018 में पाँच वर्षों के लिए बढ़ाया गया। इसे संयुक्त रक्षा सहयोग समिति (JDCC) के माध्यम से संचालित किया जाता है।

श्रम और प्रवासी समुदाय:

- कतर में भारत का बड़ा प्रवासी समुदाय है, जिसकी संख्या 7 लाख से अधिक है।
- कतर में भारतीय प्रवासी देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विशेषकर निर्माण और अन्य क्षेत्रों में।

क्षेत्रीय सहयोग:

- खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) छह मध्य पूर्व देशों – सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन और ओमान – का एक राजनीतिक एवं आर्थिक गठबंधन है। इसकी स्थापना 1981 में हुई थी।
- भारत नियमित रूप से GCC के साथ जुड़ता है और GCC के साथ अपने संबंधों को गहरा करने का लक्ष्य रखता है।

खाड़ी क्षेत्र

- खाड़ी क्षेत्र आमतौर पर मध्य पूर्व में फारस की खाड़ी के आसपास के देशों को संदर्भित करता है।



- इसमें सऊदी अरब, कुवैत, बहरीन, कतर, ओमान और संयुक्त अरब अमीरात (UAE) जैसे राष्ट्र शामिल हैं।
- यह क्षेत्र अपने विशाल तेल भंडारों के लिए जाना जाता है, जिसने वैश्विक अर्थव्यवस्था और राजनीति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

चुनौतियाँ/चिंताएँ

- हमास-इज़राइल युद्ध और लाल सागर में जहाजों पर हमले भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं आर्थिक विकास को प्रभावित करते हैं।

- भारत मध्य पूर्व की राजनीति में सतर्क रहता है, खाड़ी, ईरान और इजराइल के साथ संबंधों को संतुलित करता है।
- **कनेक्टिविटी परियोजनाओं में देरी:** संघर्ष ने 2023 से I2U2 समूह की प्रगति को धीमा कर दिया है।
 - ▲ भारत I2U2 और IMEC जैसी आर्थिक पहलों को संघर्ष के बावजूद आगे बढ़ाने का आग्रह करता है।
- **GCC के साथ FTA:** भारत-GCC मुक्त व्यापार समझौते (FTA) को अंतिम रूप देने में देरी GCC के व्यापार वार्ताकार में बदलाव के कारण हो रही है।
 - ▲ सभी GCC राज्यों को संतुष्ट करने वाला समझौता करना एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है।

आगे की राह

- भारत-कंतर साझेदारी रणनीतिक, ऊर्जा-आधारित और प्रवासी-केंद्रित है।
- संस्थागत ढाँचों को सुदृढ़ करना, आर्थिक पूरकताओं का विस्तार करना और भारतीय समुदाय के कल्याण को सुनिश्चित करना इस महत्वपूर्ण पश्चिम एशियाई साझेदारी को भविष्य के लिए सुरक्षित बनाने की कुंजी होगी।

Source: TH

प्रिसीजन बायोथेरेप्यूटिक्स

संदर्भ

- प्रिसीजन बायोथेरेप्यूटिक्स आनुवंशिक विज्ञान, आणविक जीवविज्ञान और डेटा एनालिटिक्स को एक साथ लाकर ऐसी चिकित्सा विकसित करता है जो बीमारी के कारण की पहचान एवं सुधार करती है।

प्रिसीजन बायोथेरेप्यूटिक्स क्या हैं?

- प्रिसीजन बायोथेरेप्यूटिक्स उन चिकित्सीय हस्तक्षेपों को संदर्भित करता है जो रोगी की विशिष्ट आनुवंशिक, आणविक या कोशिकीय प्रोफाइल के आधार पर डिज़ाइन और अनुकूलित किए जाते हैं। यह क्षेत्र कई तकनीकों पर आधारित है, जैसे:
 - ▲ **जीनोमिक और प्रोटीओमिक विश्लेषण:** किसी व्यक्ति के आनुवंशिक और प्रोटीन संकेतों को डिकोड करना ताकि बीमारी का कारण बनने वाले उत्परिवर्तन या विकारों की पहचान की जा सके।

- ▲ **जीन एडिटिंग थेरेपी:** सीधे जीनों को संशोधित करना ताकि मूल समस्याओं को ठीक किया जा सके (उदाहरण: रक्त विकारों के लिए CRISPR-आधारित उपचार)।
- ▲ **mRNA और न्यूक्लिक एसिड थेरेप्यूटिक्स:** RNA अणुओं का उपयोग करके कोशिकाओं को विशिष्ट प्रोटीन बनाने या हानिकारक प्रोटीन को दबाने का निर्देश देना।
- ▲ **मोनोक्लोनल एंटीबॉडी और बायोलॉजिक्स:** प्रयोगशाला में निर्मित अणु जो बीमारी के सटीक लक्ष्यों से जुड़ते हैं, जैसे कैंसर कोशिकाएँ या वायरल प्रोटीन।
- ▲ **AI-आधारित दवा खोज:** इसमें बिग डेटा और मशीन लर्निंग का उपयोग करके यह अनुमान लगाया जाता है कि अणु शरीर के अंदर कैसे परस्पर क्रिया करते हैं।

प्रिसीजन बायोथेरेप्यूटिक्स की आवश्यकता

- **जटिल बीमारियों का बढ़ता बोझ:** मध्यमेह, हृदय रोग और कैंसर जैसी गैर-संचारी बीमारियाँ देश में लगभग 65% मृत्युओं का कारण हैं।
- **प्रिसीजन:** विशेषकर कैंसर के लिए, पारंपरिक उपचार (जैसे कीमोथेरेपी) प्रायः गंभीर दुष्प्रभाव उत्पन्न करते हैं; लक्षित बायोलॉजिक्स या जीन/कोशिका उपचार अधिक सटीक हो सकते हैं।
- **भारत की आनुवंशिक विविधता:** भारत की जनसंख्या अत्यधिक आनुवंशिक रूप से विविध है, जिसका अर्थ है कि “वन-साइज़-फिट्स-ऑल” दवाएँ सभी उप-जनसंख्या पर समान रूप से कार्य नहीं कर सकतीं।
- **स्थानीय समाधान:** विदेशी देशों में बनाई और परीक्षण की गई दवाएँ भारतीय संदर्भ में प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर सकतीं।

चुनौतियाँ

- **नियामक ढाँचे की कमी:** भारत में जीन और कोशिका उपचारों के लिए स्पष्ट नियामक ढाँचा नहीं है।

- ▲ अधिकांश दिशानिर्देश उभरती तकनीकों के चिकित्सीय उपयोग को सीमित करते हैं, लेकिन उपचार का दायरा परिभाषित नहीं है।
- **लागत और वहनीयता:** प्रिसीजन बायोथेरेप्यूटिक्स विकसित और निर्मित करने में महंगे होते हैं। इससे वे भारत की बड़ी जनसंख्या के लिए अप्राप्य हो सकते हैं।
- **इंफ्रास्ट्रक्चर और क्षमता:** बायोलॉजिक्स और उन्नत उपचारों के लिए स्थानीय निर्माण क्षमता सीमित है।

भारत के प्रयास

- जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने प्रिसीजन बायोथेरेप्यूटिक्स को “अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोजगार के लिए जैव प्रौद्योगिकी” नीति के अंतर्गत छह प्रमुख क्षेत्रों में से एक के रूप में पहचाना है।
- **मैपिंग:** भारतीय अनुसंधान संस्थान जैसे इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडिकल जीनोमिक्स और ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट विभिन्न जनसंख्या समूहों में आनुवंशिक विविधता एवं रोग संवेदनशीलता को मैप करने के प्रयासों का नेतृत्व कर रहे हैं।
- ▲ निजी क्षेत्र में कई बायोफार्मा कंपनियाँ प्रिसीजन थेरेपी की खोज कर रही हैं।

आगे की राह

- वैश्विक प्रिसीजन मेडिसिन बाजार 2027 तक \$22 बिलियन से अधिक होने की संभावना है।
- भारत का कुशल कार्यबल, डेटा एनालिटिक्स की ताकत और लागत लाभ इसे सस्ती प्रिसीजन थेरेपी का संभावित केंद्र बनाते हैं।
- सख्त डेटा संरक्षण और सहमति ढाँचे के बिना, जीनोमिक जानकारी का दुरुपयोग किया जा सकता है।
- बायोलॉजिक्स निर्माण में भारत की विशेषज्ञता घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए अत्याधुनिक उपचारों के विकास का और समर्थन करेगी।

Source: TH

5वां लेखापरीक्षा दिवस

संदर्भ

- हाल ही में भारत के उपराष्ट्रपति ने 5वें लेखापरीक्षा दिवस समारोह के दौरान भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) की प्रशंसा करते हुए उन्हें ‘जन धन के संरक्षक’ कहा, जो CAG की स्थापना एवं विरासत का स्मरण है।

परिचय

- **भारत की लेखापरीक्षा संस्था की उत्पत्ति:** भारत की सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्था (SAI) देश की सबसे पुरानी शासन संस्थाओं में से एक है।
 - ▲ इसकी शुरुआत 1858 में हुई, जब एक समर्पित विभाग का गठन किया गया जिसकी अगुवाई एक महालेखाकार (Accountant General) ने की।
 - ▲ यह विभाग ईस्ट इंडिया कंपनी के खातों को बनाए रखने और वित्तीय लेन-देन की ऑडिटिंग के लिए जिम्मेदार था।
- **भारत सरकार अधिनियम, 1858:** इस अधिनियम ने साम्राज्य की आय और व्यय का वार्षिक बजट प्रस्तुत करने की नई प्रणाली (1860) शुरू की, जिसने साम्राज्यीय लेखापरीक्षा की नींव रखी।
- **प्रथम महालेखापरीक्षक:** सर एडवर्ड ड्रम्मंड 16 नवंबर 1860 को भारत के प्रथम महालेखापरीक्षक बने, जिससे भारत में संस्थागत ऑडिटिंग की औपचारिक शुरुआत हुई।
 - ▲ तभी से ‘16 नवंबर’ को लेखापरीक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- **स्वतंत्रता के पश्चात का विकास:** 1950 में भारत के संविधान को अपनाने के साथ ही नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) को संवैधानिक प्राधिकरण के रूप में मान्यता मिली।
 - ▲ ब्रिटिश शासन और स्वतंत्रता के बाद विभिन्न प्रथाओं और विधायी परिवर्तनों के माध्यम से CAG की जिम्मेदारियाँ एवं अधिकार विकसित हुए, जिससे यह सार्वजनिक जवाबदेही का संरक्षक बना।

5वें लेखापरीक्षा दिवस (2025) की प्रमुख विशेषताएँ

- **थीम:** ‘जन धन का संरक्षक’, CAG की संस्था के 166वें वर्ष को चिह्नित करता है।
- ‘परीक्षण’ से ‘शासन में भागीदार’ तक: लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं का उद्देश्य सुशासन को समर्थन देना और कार्यपालिका की जवाबदेही को सुदृढ़ करना है, साथ ही इसे ‘सुधार, दूरदृष्टि और नवाचार का अग्रगामी उपकरण’ बनाना है।
- **परिवर्तन के स्तंभ:** हितधारक सहभागिता, डिजिटल परिवर्तन, विकसित भारत 2047 के साथ संरेखण, और क्षमता निर्माण।
- **शहरीशासन और ‘जीवन की सुगमता’ लेखापरीक्षा:** CAG के संजय मूर्ति ने 101 प्रमुख शहरों का मूल्यांकन करने की योजना की घोषणा की, जिसमें शामिल हैं—
 - ▲ आधारभूत संरचना
 - ▲ पर्यावरणीय स्थिरता
 - ▲ स्थानीय आर्थिक विकास यह नागरिक-केंद्रित ऑडिटिंग की ओर बदलाव को दर्शाता है, जो शहरी विकास और सेवा वितरण पर केंद्रित है।

भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) के बारे में

- **संवैधानिक प्रावधान:** अनुच्छेद 148, जो CAG की स्वतंत्रता और अधिकार की गारंटी देता है। CAG की जिम्मेदारियाँ:
 - ▲ केंद्र और राज्य सरकारों की सभी प्राप्तियों और व्ययों का लेखापरीक्षा करना।
 - ▲ उन निकायों और प्राधिकरणों के खातों की समीक्षा करना जिन्हें सरकार द्वारा पर्याप्त वित्त पोषण प्राप्त होता है।
 - ▲ लेखापरीक्षा रिपोर्ट राष्ट्रपति या संबंधित राज्यपाल को प्रस्तुत करना, जिन्हें बाद में संसद या राज्य विधानसभाओं में रखा जाता है।
- **दृष्टि और मूल्य:** CAG का मिशन उच्च गुणवत्ता वाली ऑडिटिंग के माध्यम से जवाबदेही, पारदर्शिता और सुशासन को बढ़ावा देना है। मुख्य मूल्य: ईमानदारी, निष्पक्षता, व्यावसायिक उत्कृष्टता और जनहित।

लेखापरीक्षा के प्रकार:

- ▲ **अनुपालन लेखापरीक्षा:** नियमों और विनियमों के पालन को सुनिश्चित करता है।
- ▲ **वित्तीय लेखापरीक्षा:** वित्तीय विवरणों की सटीकता की पुष्टि करता है।
- ▲ **प्रदर्शन लेखापरीक्षा:** सरकारी कार्यक्रमों की दक्षता और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है।
- ▲ **पर्यावरणीय लेखापरीक्षा:** सार्वजनिक परियोजनाओं के पारिस्थितिक प्रभाव का आकलन करता है।
- ▲ ये लेखापरीक्षा राज्य लेखापरीक्षा कार्यालयों और विशेषीकृत शाखाओं के राष्ट्रीय नेटवर्क के माध्यम से किए जाते हैं।

सलाहकार और शासन संबंधी कार्य:

- ▲ CAG, सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (GASAB) की अध्यक्षता करता है, जो सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं के लिए लेखा मानक विकसित करता है।
- ▲ यह लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड का आयोजन करता है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होते हैं ताकि लेखापरीक्षा पद्धतियों को परिष्कृत किया जा सके।
- **CAG की नई पहलें:** CAG ने भारतीय लेखा और लेखा परीक्षा विभाग (IA&AD) में दो नई विशेष कैडरों के गठन को मंजूरी दी है, जो 1 जनवरी 2026 से लागू होंगे:
 - ▲ केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा (CRA) कैडर
 - ▲ केंद्रीय व्यय लेखापरीक्षा (CEA) कैडर

अंतरराष्ट्रीय सहभागिता

- भारत का CAG अंतरराष्ट्रीय सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थाओं के संगठन (INTOSAI) का सक्रिय सदस्य है, जो सार्वजनिक ऑडिटिंग में वैश्विक मानकों में योगदान देता है।
- यह अंतरराष्ट्रीय लेखापरीक्षा करता है और अन्य SAIs के साथ क्षमता निर्माण के लिए सहयोग करता है।

Source: New IE

भारत द्वारा जलवायु और प्रकृति वित्त के लिए मंच स्थापित करने की योजना का अनावरण

समाचारों में

- COP30, बेले (ब्राज़ील) में भारत ने 13 देशों और अफ्रीकी द्वीप राज्यों की जलवायु आयोग (AISCC) के साथ मिलकर राष्ट्रीय ‘क्लाइमेट एंड नेचर फाइनेंस प्लेटफॉर्म्स’ की घोषणा की। ये प्लेटफॉर्म्स ग्रीन क्लाइमेट फंड (GCF) के माध्यम से समर्पित किए जाएंगे।

ग्रीन क्लाइमेट फंड (GCF) क्या है?

- ग्रीन क्लाइमेट फंड (GCF) विश्व का सबसे बड़ा समर्पित बहुपक्षीय जलवायु कोष है, जिसकी स्थापना 2010 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेशन (UNFCCC) के अंतर्गत की गई थी।
- इसका उद्देश्य विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन का सामना करने में मदद करना है, जिसमें अनुकूलन (Adaptation) और शमन (Mitigation) दोनों गतिविधियों का समर्थन शामिल है।
- GCF, पेरिस समझौते के अनुच्छेद 9 के अनुसार, उसके क्रियान्वयन का केंद्रीय हिस्सा है। यह विकासशील देशों को उनके राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) और जलवायु लचीलापन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है।
- इसका वित्तपोषण मुख्य रूप से विकसित देशों के स्वैच्छिक योगदान से होता है, साथ ही निजी क्षेत्र और अन्य स्रोतों से अतिरिक्त समर्थन मिलता है।
- GCF को अपने संसाधनों का 50% शमन और 50% अनुकूलन में अनुदान समकक्ष निवेश करने का दायित्व है।
- इसका मुख्यालय इंचियोन, दक्षिण कोरिया में स्थित है।

भारत ने “कंटी प्लेटफॉर्म” क्लाइमेट एंड नेचर फाइनेंस के लिए क्यों शुरू किया?

- भारत पहले से ही GCF के साथ संवाद करता है। लेकिन वर्तमान प्रणाली बिखरी हुई है — कई मंत्रालय, संस्थान और निजी क्षेत्र अलग-अलग प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं।

- एकीकृत राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म के लाभ:
 - सभी जलवायु-संबंधी वित्तीय प्रयासों को एक मंच के अंतर्गत लाना है।
 - केंद्र मंत्रालयों, राज्य सरकारों और निजी संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना।
 - प्रस्ताव तैयार करने और परियोजना अनुमोदन की गति बढ़ाना।
 - GCF के कम लागत वाले क्रम और अनुदानों तक अधिक पहुंच सुनिश्चित करना।
 - भारत की आगामी राष्ट्रीय अनुकूलन योजना (National Adaptation Plan) को समर्थन देना।
 - वैश्विक अनुकूलन लक्ष्य (Global Goal on Adaptation - GGA) संकेतकों के माध्यम से अनुकूलन परिणामों की बेहतर निगरानी करना।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

रौलाने महोत्सव

समाचारों में

- हाल ही में हिमाचल प्रदेश का रौलाने उत्सव चर्चा में रहा।

रौलाने उत्सव के बारे में

- रौलाने उत्सव एक प्राचीन, लगभग 5,000 वर्ष पुराना पारंपरिक उत्सव है, जिसे हिमाचल प्रदेश के किन्नौर ज़िले में मनाया जाता है।
- यह उत्सव रहस्यमयी आकाशीय परियों सौनिस को सम्मानित करने के लिए आयोजित किया जाता है।

उत्सव की मुख्य विशेषताएँ:

- इसमें दो पुरुष प्रतीकात्मक दूल्हा (रौला) और दुल्हन (रौलाने) की भूमिका निभाते हैं।
- वे पारंपरिक किन्नौरी ऊनी वस्त्रों में पूरी तरह ढके होते हैं और रहस्यमयी अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करने के लिए मुखौटे एवं आभूषणों से सुसज्जित रहते हैं।
- यह जोड़ी धीमी गति से भक्तिपूर्ण जुलूस और नृत्य करते हुए नागिन नारायण मंदिर तक पहुँचती है।

महत्व:

- यह नृत्य और जुलूस मानव और आत्मिक जगत के बीच एक सेतु के रूप में देखा जाता है।
- इसका उद्देश्य समुदाय के लिए कृतज्ञता, सुरक्षा एवं आशीर्वाद व्यक्त करना है।

Source: TH

आदि कुम्भेश्वर मंदिर**संदर्भ**

- आदि कुम्भेश्वर मंदिर, कुंभकोणम (तमिलनाडु) के कुंभाभिषेक (अभिषेक/संस्कार) ने मंदिर में संरक्षित अद्वितीय पत्थर के नागस्वरम — एक दुर्लभ वाय यंत्र — पर नया ध्यान आकर्षित किया है।

मंदिर के बारे में

- कुंभकोणम (जिला तंजावुर, तमिलनाडु) का आदि कुम्भेश्वर मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें यहाँ लिंगम के रूप में आदि कुम्भेश्वर के रूप में पूजा जाता है।
- यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला की प्रमुख विशेषताओं को प्रदर्शित करने वाला एक स्थापत्य धरोहर है और माना जाता है कि यह लगभग 1,300 वर्ष पुराना है।
- मंदिर का निर्माण चोल काल (9वीं शताब्दी ईस्वी) में हुआ था और बाद में नायक शासकों द्वारा इसका जीर्णोद्धार किया गया।
- यह उन 12 शिव मंदिरों में से एक है जो महामहम उत्सव से जुड़े हैं, जो प्रत्येक 12 वर्ष में कुंभकोणम में आयोजित होता है।

Source: TH

सेनकाकू द्वीप समूह**समाचारों में**

- चीन तटरक्षक जहाजों के एक बेड़े ने सेनकाकू/दियाओयू द्वीपों के पास “अधिकार प्रवर्तन गश्त” (rights enforcement patrol) की, जिससे जापान के साथ तनाव बढ़ गया।

सेनकाकू द्वीप

- “सेनकाकू द्वीप” एक सामूहिक शब्द है जो उन द्वीपों के समूह को संदर्भित करता है जिनमें शामिल हैं: उओत्सुरी, किताकोजीमा, मिनामिकोजीमा, कुबा, ताइशो, ओकिनोकिताइवा, ओकिनोमिनामिइवा और टोबिसो।
- ये द्वीप ओकिनावा प्रान्त के इशिगाकी शहर का हिस्सा हैं।
- ये पूर्वी चीन सागर में स्थित हैं और ताइवान से लगभग 170 किमी तथा चीन से लगभग 330 किमी दूर हैं।

विवाद:

- सेनकाकू द्वीप लंबे समय से जापान-चीन संबंधों में विवाद का विषय रहे हैं। दोनों देश इन निर्जन पथरीले द्वीपों पर ऐतिहासिक दावा करते हैं।
- वर्तमान में इनका नियंत्रण जापान के पास है।

Source :TH

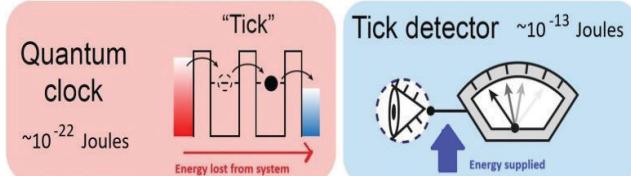
क्वांटम घड़ी**संदर्भ**

- वैज्ञानिक अब क्वांटम स्तर पर समय मापन कैसे कार्य करता है, इसका अध्ययन क्वांटम क्लॉक का विश्लेषण करके कर रहे हैं।

परिचय

- शोधकर्ताओं ने पाया कि क्वांटम क्लॉक को मापने में उसकी वास्तविक कार्यप्रणाली की तुलना में कहीं अधिक ऊर्जा व्यय होती है — लगभग एक अरब गुना अधिक।
- कारण:** पारंपरिक घड़ियाँ, जैसे झूलते पेंडुलम से लेकर परमाणु दोलकों तक, समय को मापने के लिए अपरिवर्तनीय प्रक्रियाओं पर निर्भर करती हैं।
 - क्वांटम स्तर पर ये प्रक्रियाएँ अत्यंत कमजोर हो जाती हैं या लगभग घटित ही नहीं होतीं, जिससे सटीक समय मापन बहुत कठिन हो जाता है।
 - वे उपकरण जो सटीक समय पर निर्भर करते हैं, उन्हें ऐसी घड़ियों की आवश्यकता होगी जो न्यूनतम ऊर्जा का उपयोग करें।

- घड़ी को पढ़ने के लिए आवश्यक ऊर्जा, घड़ी को चलाने के लिए आवश्यक ऊर्जा से लगभग एक अरब गुना अधिक होती है।



महत्व

- यह खोज लंबे समय से चली आ रही उस धारणा को पलट देती है कि क्वांटम भौतिकी में मापन की लागत नगण्य होती है।
- यह एक चौंकाने वाला विचार भी प्रस्तुत करती है: अवलोकन ही समय को दिशा देता है, क्योंकि यह प्रक्रिया को अपरिवर्तनीय बना देता है।
- यह परिणाम उस सामान्य विश्वास को चुनौती देता है कि क्वांटम क्लॉक्स को बेहतर बनाने के लिए केवल बेहतर क्वांटम प्रणालियों की आवश्यकता है।
- इसके बजाय, शोधकर्ताओं का तर्क है कि प्रगति इस बात पर निर्भर करेगी कि घड़ी की टिक को पहचानने और व्याख्या करने के लिए अधिक कुशल तरीकों का विकास किया जाए।

Source: TH

कोरोनल मास इजेक्शन

समाचारों में

- खगोलविदों ने प्रथम बार सूर्य के अतिरिक्त किसी अन्य तारे पर कोरोनल मास इजेक्शन (CME) का पता लगाया है।

कोरोनल मास इजेक्शन (CMEs)

- कोरोनल मास इजेक्शन सूर्य से निकली प्लाज्मा और चुंबकीय क्षेत्रों के विशाल बुलबुले होते हैं, जो प्रायः मुँड़ी हुई “फ्लक्स रोप्स” के रूप में दिखाई देते हैं।
- ये कभी-कभी सौर ज्वालाओं (Solar Flares) के साथ होते हैं या स्वतंत्र रूप से घटित हो सकते हैं। इनकी आवृत्ति 11-वर्षीय सौर चक्र से जुड़ी होती है — सौर

न्यूनतम (Solar Minimum) पर लगभग सप्ताह में एक बार और सौर अधिकतम (Solar Maximum) पर प्रतिदिन 2–3 बार तक।

- CMEs सौर पवन (Solar Wind) को बाधित करते हैं, पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से मिल जाते हैं और मैग्नेटोस्फीयर में बड़ी मात्रा में ऊर्जा स्थानांतरित करते हैं।
 - यही कारण है कि वे भू-चुंबकीय तूफानों और उप-तूफानों के प्रमुख कारक होते हैं, जो पृथ्वी के निकट स्थित प्रणालियों को हानि पहुँचा सकते हैं, लेकिन साथ ही उच्च अक्षांशों पर शानदार आँरोरा (Auroras) भी उत्पन्न करते हैं।

Source :TH

सिलीगुड़ी कॉरिडोर

संदर्भ

- भारतीय सेना ने सामरिक रूप से महत्वपूर्ण सिलीगुड़ी कॉरिडोर के पास तीन नए गैरीसन स्थापित किए हैं।
 - बांग्लादेश में शासन परिवर्तन और चीन की बढ़ती मौजूदगी को लेकर सिलीगुड़ी कॉरिडोर की संवेदनशीलता पर सुरक्षा चिंताएँ हैं।



- नए परिचालित स्टेशन सेना की परिचालन तत्परता को सुदृढ़ करने और सीमा सुरक्षा बल (BSF) के साथ समन्वय को बेहतर बनाने की संभावना है।

सिलीगुड़ी कॉरिडोर के बारे में

- इसे चिकन नेक (Chicken's Neck) भी कहा जाता है। यह पश्चिम बंगाल में स्थित भूमि की एक संकरी पट्टी है जो पूर्वोत्तर राज्यों को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ती है।

- यह पूर्वी भारत का अत्यंत महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र है, जो महानंदा और तीस्ता नदियों के बीच स्थित है।

सिलीगुड़ी कॉरिडोर का महत्व

- सामरिक संपर्क (Strategic Connectivity):** यदि यह बाधित हो जाए तो पूर्वोत्तर राज्यों का बाकी देश से संपर्क टूट जाएगा, जिससे सरकार के लिए आवश्यक वस्तुएँ, सेवाएँ और सैन्य सहयोग पहुँचाना कठिन हो जाएगा।
- सैन्य और रक्षा विचार (Military and Defense Considerations):** यह संवेदनशील अंतरराष्ट्रीय सीमाओं — विशेषकर चीन, नेपाल और बांग्लादेश — के निकट स्थित है।

इसे सुरक्षित रखना संघर्ष की स्थिति में भारतीय सेनाओं और आपूर्ति की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित करता है।

- भूराजनीतिक संवेदनशीलता (Geopolitical Vulnerability):** कॉरिडोर की संकीर्णता इसे अवरोधों या विरोधियों के नियंत्रण के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाती है।
 - किसी भी व्यवधान से भारत का पूर्वोत्तर से संपर्क कट सकता है, जिससे बाहरी शक्तियों को क्षेत्र को प्रभावित या अस्थिर करने का अवसर मिल सकता है।

Source: TH

